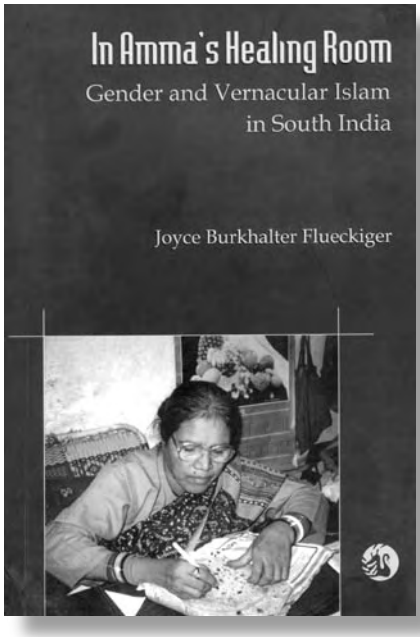

इन अम्माज़ हीलिंग रूम :
जेंडर एण्ड वरनेक्यूलर इस्लाम इन साउथ इण्डिया

लेखक : **जॉयस बुर्कहॉल्टर फ्लूएकआइगर**

भाषा : **अंग्रेज़ी**

प्रकाशक : **ओरियंट लांगमैन प्राईवेट लिमिटेड**

पृष्ठ : **295**

इन अम्माज़ हीलिंग रूम, एक मुस्लिम हीलर 'अम्मा' के जीवन और आध्यात्मिक दर्शन का विविध चित्रण है। अम्मा हैदराबाद में रहती हैं और खुद को एक 'पीरानिमा' यानी पीर की पत्नी के रूप में चिन्हित करती हैं। अम्मा के इलाज की परम्परा एक देशज इस्लामी व्यवहार और फलसफे से उपजी है जिसका केंद्र एक महिला पीर यानी खुद अम्मा है। अम्मा का यह मानना है कि इस्लामी देशज अभिव्यक्ति में वह लचीलापन और सृजनात्मकता मौजूद है जिसे मुसलमान व गैर मुसलमान सभी मज़हब के लोग व्यापक, एकल और समान रूप से असरदार मानते हैं। भारतीय समाज की पारम्परिक रवायतों में पीर/फकीरों के माध्यम से रोग मुक्त होने का चलन बहुत पुराना है जिस पर सभी धर्मों के लोग आस्था रखते हैं। अम्मा की इलाज परम्परा भी इसी शैली में गिनी जाती है।

अम्मा की इलाज परम्परा में कुछ खास बातें नज़र आती हैं जो इस देशज इस्लामी रवायत को अहम बनाती हैं। सबसे पहली बात यह है कि अम्मा खुद एक महिला है जो एक ऐसी परम्परा को व्यवहार में लाती है जिस पर पुरुषों की मिल्कियत रही है। ऐसा करके वे समाज के तयशुदा मापदण्डों से अलग हटकर उस दुनिया में कदम रखती हैं जहां उन्हें बार-बार अपनी काबलियत का भरोसा दिलाना पड़ता है। अम्मा को अपनी सत्ता और अपना कौशल निरन्तर बनाए रखना पड़ता है जिससे वे सार्वजनिक तौर पर स्त्री-पुरुष, हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सबके बीच अपनी साख कायम रख पाएं।

दूसरी बात यह है कि अम्मा के पास इलाज के लिए आने वाले रोगियों में अधिकांश महिलाएं हैं जो उनके पास सहजता से इसलिए आ पाती हैं क्योंकि वे खुलकर अपनी 'बेचैनी' और 'परेशानी' बयान कर सकती हैं। पुरुष रोगहरों की तुलना में अम्मा उन्हें अधिक संवेदनशील और स्नेह देने वाली लगती हैं।

और तीसरी महत्वपूर्ण बात है कि अम्मा के पास आने वाले रोगियों में सभी धर्मों के लोग शामिल हैं। तो फिर वह कौन सा कारण है कि ये धार्मिक इलाज परम्परा धर्म की दीवारें तोड़कर सबको एक समान प्रतीत होती है? जैसा कि अम्मा बताती हैं, "*इलाज की परम्परा के सामने मज़हबी*

दीवारें ढह जाती हैं और हम एक दूसरे के साथ इंसानी रिश्ते बनाते हैं। हमारे बीच रोग और निदान का रिश्ता होता है जो विश्वास, प्यार और तसल्ली पर आधारित है। जहां तक आध्यात्मिक इलाज परम्पराओं का सवाल है वहां हमारे समाज में धर्म, जाति की सरहदें मायने नहीं रखतीं।"

पर क्या अम्मा का 'ताबीज़', 'पुड़िया' हिंसक पतियों, पारिवारिक क्लेश और बिगड़े बेटों को रास्ते पर ला सकते हैं? लेखिका ने इस प्रश्न को उठाकर इसका जबाव भी खुद ही दिया है। शायद अम्मा का इलाज लोगों के मनोवैज्ञानिक मानस पर काम करता है और औरतें वापस अपने घर सशक्तता और आत्मविश्वास के साथ जाती हैं। यही इस इलाज शैली का सच है।

अम्मा की इस इलाज परम्परा को लेखिका ने 'देशज इस्लाम' का नाम दिया है जिसका आधार सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक है। इस पुस्तक के लिए की गई अपनी शोध के दौरान लेखिका ने पाया कि अम्मा की रोग हरने की क्षमता उनका व रोगी का आध्यात्मिक विश्वास है। दोनों मानते हैं कि 'शैतान' के हाथों 'परेशान' आत्मा का तोड़ आध्यात्मिक ही हो सकता है। शारीरिक बीमारियों के लिए ऐलोपैथिक इलाज हो सकता है पर आध्यात्मिक तकलीफ में आध्यात्म का अपना एक अलग मुकाम है।

अम्मा के साथ लेखिका का रिश्ता एक गुरु-शिष्य का है जिसके माध्यम से अम्मा की देशज इलाज परम्परा को पाठकों तक पहुंचाने की कोशिश की गई है। इस पुस्तक में लेखिका ने ज़्यादातर बातें अम्मा, उनके साथियों, उनके शार्गिदों की जुबानी सुनकर प्रस्तुत की है। अपने शोध की प्रक्रिया को लेखिका ने अम्मा के साथ अपने रिश्ते के माध्यम से समझा, जिसमें कभी वे एक शिष्या बनीं, कभी शोधकर्ता और कभी एक बेटी। यह किताब भारत तथा विश्व स्तर पर धर्म, जेंडर और देशज परम्पराओं के मौजूदा विचारों को चुनौती देकर एक ऐसी रचनात्मक परम्परा से पाठकों का परिचय कराती हैं जहां स्त्री-पुरुष, हिन्दू-मुसलमान और अमीर-गरीब के भेद मिट गए हैं। अम्मा के अपने शब्दों में, *"ये इलाज की परम्परा एक चौरास्ता है जिसमें धार्मिक व सामाजिक पहचानें एक समान धरातल पर एक हो जाती हैं और जहां मकसद होता है परेशानी से निजात पाना।"*

मूलतः इस पुस्तक में छः पाठ हैं। पहले पाठ में पाठकों का परिचय उस माहौल व जगह से कराया गया है जहां ये हीलिंग होती है। अगले चार पाठों में रोगहर प्रक्रिया, रोगियों से साक्षात्कार, धार्मिक पहचान, जेंडर संबंधी परम्पराओं का विश्लेषण किया गया है। पाठ छः में जेंडर, धार्मिक पहचान व सत्ता के संबंधों की समीक्षा की गई है जो इस शोध का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पुस्तक के सारांश में अम्मा के जीवन के उन रिश्तों की अहमियत का ब्यौरा है जो उनकी रोग हरने की क्षमता को सशक्तता प्रदान करते हैं। इसमें अम्मा की खुदा और अपने पति अब्बा के साथ रिश्तों का ज़िक्र किया गया है जिसका आधार मुहब्बत और विश्वास है।

यह पुस्तक उन शोधकर्त्ताओं, अकादमिकों और चिंतकों के लिए उपयोगी साबित होगी जो धर्म, जेंडर और वैकल्पिक हीलिंग परम्पराओं पर अपनी समझ बनाना चाहते हैं। पुस्तक की भाषा अकादमिक है परन्तु उदाहरणों की मौजूदगी इसे समझने में मदद करती है।

-जुही जैन